हिमकाल में जीवन के लिए संघर्ष

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

जिस समय मानव का उदविकास हो रहा था उसी समय पृथ्वी के अधिकांस भागों पर हिम का जमाव हो रहा था. हिम की आंधिया चल रही थी तथा सतह बर्फ से लगभग ढँक चुकी थी| इसे हिमयुग कहा गया| पृथ्वी पर इस प्रकार के हिमयुग समय-समय पर आते रहे है| परन्तु मानव उदविकास के हिमयुग के दौर में मानव जीवन अति दुरूह तथा कठिन स्थिति में हो गया| ऐसे में मानव को प्रकृति के साथ काफी संघर्ष करना पड़ा|

प्राकृतिक रूप से ही पृथ्वी पर अंतर्हिमयुग की शुरुआत हुई| इससे बर्फ पिघलना शुरू हुआ और बर्फ अत्यंत छोटे क्षेत्र में सिकुड़ कर रह गया| अंतिम रूप से कहा जा सकता है की मानव ने चरम परिस्थितियों में भी अपनी उत्तरजीविता कायम रखी तथा उदविकास क्रमिक रूप से होता रहा|

पाषाण उपकरणों का प्रयोग

पाषाण यानी 'पत्थर' का प्रयोग आदि मानवों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता थी| यह आदि मानव का एकमात्र सहारा होने के साथ ही हमारे द्वारा पाषाण काल के अध्ययन के लिए भी अति उपयोगी है| यह इतने महत्वपूर्ण है की पत्थर के औजार को आधार बनाकर इस काल का अध्ययन किया जाता है|

आदि मानव ने अपने विकास के लिए प्रकृति में विद्यमान पाषाण को उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया| जहाँ एक ओर प्रकृति ने इसके समक्ष कई गंभीर चुनौतियां पेश की वहीं पत्थर के औजार उसके मित्र के रूप में सामने आये| चूँकि इस काल के इतिहास की जानकारी का प्रमुख साधन पाषाण (पत्थर) से बने विभिन्न प्रकार के औजार है. इसीलिए इसे पाषाण काल (Stone age) कहा जाता है|

पाषाण काल एक लम्बी अवधि है इसीलिए इस काल खंड को तीन भाग में बाँट कर अध्ययन किया जाता है|

- पुरापाषाणकाल (5 लाख-10000BC)
- मध्य पाषाण काल
- नवपाषाण काल

निष्कर्ष: Manav Ke Kramik Vikas ki Kahani.

मानव इस पृथ्वी पर अवतरित न होकर उदविकास के जरिये अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त किया है| जीव विज्ञान के अनुसार पृथ्वी पर मानव सहित सभी जीवों का विकास क्रमिक रूप से हुआ है| चार्ल्स डार्विन का सिद्धांत, प्राकृतिक चयन का सिद्धांत (Theory of natural selection), प्रजातियों की उत्पत्ति (Origin of species) तथा योग्यतम उत्तरजीवता (Survival of the fittest) के सिद्धांत को अन्य जीवों के साथ-साथ मानव पर भी लागू किया जाता है|

इसके तहत माना गया कि मानव अपने पूर्ववर्ती जीव रूपों से उदविकास के फलस्वरूप अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त किया है| 1859 में चार्ल्स डार्विन की पुस्तक 'Origin of species' ने भी मानव को उदविकास का परिणाम बताया| तमाम प्रयोगों से भी यह प्रमाणित हुआ की 20 लाख से 1000 BC के बीच प्राइमेट्स से मानव का विकास हुआ है|

उदविकास के साथ विकास के क्रम में हिमयुग काल में मानव को जीवन के लिए संघर्ष करना पड़ा| लेकिन पत्थर के औजारों के प्रयोग के साथ मानव ने न केवल खुद को जीवित रखा बल्कि स्वयं कोआदि मानव से आधुनिक मानव के रूप में बदला|